हनुमान् चालीसा (तुलसीदास कृतं)

हनुमान् चालीसा (तुलसीदास कृतं)

दोहा-
श्री गुरु चरण सरोज रज
निजमन मुकुर सुधारि
वरणौ रघुवर विमल यश
जो दायक फलचारि ||

बुद्धिहीन तनु जानिके
सुमिरौ पवनकुमार
बल बुद्धि विद्या देहु मोहि
हरहु कलेश विकार ||

चौपाई-
जय हनुमान ज्ञानगुणसागर |
जय कपीश तिहु लोक उजागर || 1 ||

रामदूत अतुलित बलधामा |
अंजनिपुत्र पवनसुत नामा || 2 ||

महावीर विक्रम बजरंगी |
कुमति निवार सुमति के संगी || 3 ||

कंचन वरण विराज सुवेशा |
कानन कुंडल कुंचित केशा || 4 ||

हाथ वज्र औरु ध्वजा विराजै |
कांधे मूंज जनेवू साजै || 5 ||

शंकर सुवन केसरीनंदन |
तेज प्रताप महा जगवंदन || 6 ||

विद्यावान गुणी अतिचातुर |
राम काज करिवे को आतुर || 7 ||

प्रभु चरित्र सुनिवे को रसिया |
राम लखन सीता मन बसिया || 8 ||

सूक्ष्मरूप धरि सियहि दिखावा |
विकटरूप धरि लंक जरावा || 9 ||

भीमरूप धरि असुर संहारे |
रामचंद्र के काज संवारे || 10 ||

लाय संजीवन लखन जियाये |
श्रीरघुवीर हरषि वुर लाये || 11 ||

रघुपति कीन्ही बहुत बडायी |
तुम मम प्रिय भरत सम भायी || 12 ||
[** पाठभेदः – कहा भरत सम तुम प्रिय भायि **]

सहस वदन तुम्हरो यश गावै |
अस कहि श्रीपति कंठ लगावै || 13 ||

सनकादिक ब्रह्मादि मुनीशा |
नारद शारद सहित अहीशा || 14 ||

यम कुबेर दिगपाल जहाँ ते |
कवि कोविद कहि सके कहाँ ते || 15 ||

तुम उपकार सुग्रीवहि कीन्हा |
राम मिलाय राज पद दीन्हा || 16 ||

तुम्हरो मंत्र विभीषण माना |
लंकेश्वर भये सब जग जाना || 17 ||

युग सहस्र योजन पर भानू |
लील्यो ताहि मधुर फल जानू || 18 ||

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माही |
जलधि लांघि गये अचरज नाही || 19 ||

दुर्गम काज जगत के जेते |
सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते || 20 ||

राम दुवारे तुम रखवारे |
होत न आज्ञा बिनु पैठारे || 21 ||

सब सुख लहै तुम्हारी शरणा |
तुम रक्षक काहू को डरना || 22 ||

आपन तेज संहारो आपै |
तीनौं लोक हांक तें कांपै || 23 ||

भूत पिशाच निकट नहिँ आवै |
महावीर जब नाम सुनावै || 24 ||

नासै रोग हरै सब पीरा |
जपत निरंतर हनुमत वीरा || 25 ||

संकटसे हनुमान छुडावै |
मन क्रम वचन ध्यान जो लावै || 26 ||

सब पर राम तपस्वी राजा |
तिन के काज सकल तुम साजा || 27 ||

और मनोरथ जो कोयी लावै |
सोयि अमित जीवन फल पावै || 28 ||

चारौं युग प्रताप तुम्हारा |
है परसिद्ध जगत उजियारा || 29 ||

साधुसंतके तुम रखवारे |
असुर निकंदन राम दुलारे || 30 ||

अष्ट सिद्धि नव निधि के दाता |
असवर दीन्ह जानकी माता || 31 ||

राम रसायन तुम्हरे पासा |
सदा रहो रघुपति के दासा || 32 ||

तुम्हरे भजन राम को पावै |
जन्म जन्म के दुख बिसरावै || 33 ||

अंतकाल रघुपति पुर जायी | [** रघुवर **]
जहाँ जन्म हरिभक्त कहायी || 34 ||

और देवता चित्त न धरयी |
हनुमत सेयि सर्वसुखकरयी || 35 ||

संकट हटै मिटै सब पीरा |
जो सुमिरै हनुमत बलवीरा || 36 ||

जै जै जै हनुमान गोसायी |
कृपा करहु गुरु देव की नायी || 37 ||

यह शतवार पाठ कर कोयी |
छूटहि बंदि महासुख होयी || 38 ||

जो यह पढै हनुमान चालीसा |
होय सिद्धि साखी गौरीसा || 39 ||

तुलसीदास सदा हरि चेरा |
कीजै नाथ हृदय मह डेरा || 40 ||

दोहा-
पवनतनय संकट हरण
मंगळ मूरति रूप ||
राम लखन सीता सहित
हृदय बसहु सुर भूप ||